

गढ़वाल हिमालय की लोक संस्कृति में सिद्ध एवं नाथ परम्परा

डॉ. नवीन चंद्र भट्ट¹ एवं प्रो. जयप्रकाश भट्ट²

¹पोस्ट-डॉक्टरल अध्येता, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली।

²समाजशास्त्र और समाज कार्य विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय),
श्रीनगर-गढ़वाल - 246174, (उत्तराखंड), भारत

सारांश

उत्तराखण्ड का गढ़वाल हिमालयी क्षेत्र अपनी प्राचीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध रहा है। प्राचीन काल से ही हिमालय के इस पवित्र भू-भाग को अनेक सिद्ध ऋषि-मुनियों, ज्ञानियों एवं तपस्वियों ने योग-साधना और सिद्धि-प्राप्ति के लिए चुना। गढ़वाल की सामाजिक एवं लोक सांस्कृतिक परंपराओं में तंत्र-मंत्र और योग साधना का समृद्ध इतिहास रहा है। यहाँ की पर्वतीय संस्कृति में धर्म, मान्यताएँ, लोकविश्वास और आध्यात्मिक धारणाएँ आपस में भावात्मक रूप से जुड़ी हुई हैं। विशेष रूप से सिद्ध-नाथपंथ की परंपरा ने गढ़वाल के धार्मिक और तांत्रिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया। सिद्ध-नाथ योगियों की साधना पद्धति, उनकी मंत्र साधना और लोकजीवन से जुड़े आध्यात्मिक प्रयोगों ने यहाँ के समाज में तन्त्र-मन्त्र पर आधारित योग साधना परंपरा को जन्म दिया, जिसे शाबर मंत्र परंपरा के रूप में जाना जाता है। सिद्ध-नाथपंथ की स्थापना का श्रेय गुरु मछेन्द्रनाथ और उनके शिष्य गुरु गोरखनाथ को दिया जाता है। इस परंपरा का मूल उद्देश्य योग साधना और तांत्रिक ज्ञान के माध्यम से आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करना था। नाथ सिद्धों ने अपनी योग एवं साधना पद्धति को केवल मठ-मन्दिरों तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे लोकजीवन से भी जोड़ने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप उनके द्वारा लोक व्यवहार में प्रयुक्त अनेक शाबर तन्त्र-मंत्र स्थानीय भाषाओं और बोलियों में प्रचलित हो गए। गढ़वाल में भी सिद्ध-नाथपंथ के शाबर मंत्रों में संस्कृतनिष्ठ भाषा के साथ-साथ पाली, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं का समावेश देखने को मिलता है।

बीज शब्द - गढ़वाल हिमालय, लोक-संस्कृति, सिद्ध-नाथ परम्परा, आध्यात्मिक धारणाएँ, शाबर मन्त्र, जागर गीत।

परिचय:

प्रस्तुत शोध अध्ययन गढ़वाल हिमालय में सिद्ध-नाथ परंपरा के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक स्वरूप का विश्लेषण करता है। इसमें सिद्ध-नाथ संप्रदाय की गुरु-शिष्य परंपरा, योगियों की साधना पद्धति, लोकजीवन से सम्बन्ध तथा क्षेत्रीय धार्मिक चेतना के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का समग्र विवेचन किया गया है। साथ ही सिद्ध एवं नाथ परम्परा ने गढ़वाल की लोक संस्कृति, धार्मिक आस्था तथा आध्यात्मिक जीवनदृष्टि को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोतों, लोकगीतों, जागर गीतों, लोककथाओं, लोकगाथाओं, जनश्रुतियों, धार्मिक ग्रंथों तथा क्षेत्रीय परंपराओं के आधार पर सिद्ध-नाथ परंपरा की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक निरंतरता का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत क्षेत्रीय अध्ययन, स्थानीय विद्वानों एवं परंपरागत ज्ञानधारकों के साक्षात्कार तथा उपलब्ध साहित्य का समीक्षात्मक परीक्षण किया गया है। यह अध्ययन सिद्ध-नाथ परंपरा को गढ़वाल की लोक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा के जीवंत स्रोत के रूप में स्थापित करता है। साथ ही समकालीन गढ़वाली समाज में इस परंपरा का प्रभाव धार्मिक आस्था, लोकविश्वास, सांस्कृतिक अनुष्ठानों तथा

आध्यात्मिक जीवन में निरंतर विद्यमान है। इस प्रकार यह शोध अध्ययन सिद्ध-नाथपंथ से सम्बन्धित दार्शनिक योग साधना, आध्यात्मिक परंपराओं और लोक सांस्कृतिक मूल्यों के अन्तर्सम्बन्धों के सम्यक विवेचन की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करता है।

गढ़वाल हिमालय के लोकजीवन में प्रचलित अनेक शाबर मंत्रों में सिद्ध-नाथ परम्परा का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यहाँ के शाबर मंत्रों के आरम्भ में सिद्ध-नाथपंथ के गुरुओं गोरखनाथ, मछेन्द्रनाथ, सत्यनाथ, ब्रह्मनाथ, चौरंगीनाथ सिद्धों का आह्वान किया जाता है। सिद्ध-नाथ योगियों की साधना परंपरा यहाँ के लोकविश्वास में आध्यात्मिक और दार्शनिक मान्यता के रूप में गहराई से समाहित है। "गोरखनाथ से पहले सिद्धों की परम्परा आठवीं तथा नवीं शताब्दी तक जाती है। उस समय तक सिद्धों का प्रचार देश के अनेक भागों में हो गया था। इसी समय नाथपंथ का प्रादुर्भाव हुआ। गोरखनाथ ने नाथपंथ को सुधार कर पुरानी प्रथाओं के स्थान पर त्याग, तपस्या और योग की नई परम्पराओं पर जोर दिया। फलस्वरूप नाथपंथ भारत के कोने-कोने तक फैल गया और इसके मानने वालों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी। सम्पूर्ण भारत में फैली नाथपंथ की गढ़ियाँ नाथों को अपने चौरासी सिद्धों से सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुई।" यहाँ के लोक साहित्य में सिद्धों और नाथों में गुरु सिद्धनाथ, मछेन्द्रनाथ, त्रिलोकीनाथ, चौरंगीनाथ, ब्रह्मनाथ, विष्णुनाथ, गोरखनाथ, सत्यनाथ और भैरोंनाथ आदि का वर्णन मिलता है। व्यावहारिक लोकजीवन में तंत्र-मन्त्रों का आरम्भ ओम नमः आदेश, गुरु को आदेश, नौ-नाथ चौरासी सिद्ध को आदेश, गुरु मछेन्द्रनाथ को ध्यान जाग, गुरु गोरखनाथ को ध्यान जाग, गुरु गोरखनाथ की आण, चौरंगीनाथ भैरों को आदेश आदि मन्त्रों से होता है, और मन्त्रों के अन्त में ईश्वरोवाच फट स्वाहा, फुर मंत्र ईश्वरोवाच व फट स्वाहा से समाप्त किया जाता है। "कभी गढ़वाल में जादू-टोना और तंत्र-मंत्र का बहुत प्रचार था। आज भी बहुतों के घरों में पुरानी पोथियाँ पड़ी हुई है। नई शिक्षा प्रणाली के कारण इनका प्रयोग कम हो गया है, किन्तु पुरा काल में मानव की आशा-आकांक्षा, भय-त्रास तथा सुरक्षा की दृष्टि से इनका चिकित्सकीय और मनोवैज्ञानिक महत्व कम नहीं आँका जा सकता। वज्रयान से लेकर मध्यकालीन सिद्धों तक भारतीय धर्म साधना में इनका बोलबाला रहा है।

गढ़वाल में झाड़-ताड़, रखवाली, उषेल भेद, गाँठू तथा रोग निवारण और मारण, मोहन, उच्चाटन, प्रभाव मोचन में उनका प्रयोग होता रहा है। स्वयं इनमें गढ़वाल के राजाओं विशेषतः अजयपाल, श्यामशाह और रानी कर्णावती के नामों के 'आण' की बात कही गई है।" गढ़वाल नरेश अजयपाल नाथपंथ के उपासक थे। जिन्होंने नाथपंथी गुरु सत्यनाथ से शिक्षा प्राप्त की। महाराजा अजयपाल ने नाथपंथ से प्रभावित होकर स्वयं हस्तलिखित ग्रंथ अजैपाल जन्त्र, साबरी और सैलिनाम जन्त्र को गढ़वाली भाषा में लिखा।



गढ़वाल में नाथपंथ के प्रमुख केंद्र देवलगढ़ में आदिनाथ भगवान शिव, गुरु सत्यनाथ एवं गढ़वाल नरेश राजा अजयपाल

प्राचीन भारतीय वाङ्मय में 'तंत्रशास्त्र' की उत्पत्ति और उसके ज्ञाता के रूप में भगवान शिव को माना जाता है। भगवती महामाया (पार्वती) ने उसके विकास में विशेष योगदान दिया। भगवान शिव के तंत्रशास्त्र में उपदिष्ट मंत्र आगम और भगवती महामाया के उपदिष्ट मंत्र निगम कहलाते हैं। जिस कारण तंत्रशास्त्र के मंत्र आगम-निगम माने जाते हैं। इस प्रकार तंत्रशास्त्र का सृजन शिव-शक्ति द्वारा लोक-कल्याण के निहितार्थ किया गया। लोकजीवन में तंत्रशास्त्र के यही मन्त्र बोल-चाल की भाषा में आने से शाबर-मन्त्रों के रूप में प्रसिद्ध हुए। जिसका उद्देश्य संसार को आरोग्य और सुखकर जीवन प्रदान करना है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में शाबर मंत्र के सन्दर्भ में लिखा है कि भगवान शिव ने कलिकाल में जगत के कल्याण के लिए शाबर मन्त्रों की रचना की, जिनका निरंतर जप और ध्यान करने से प्रत्यक्ष फल की प्राप्ति संभव है।

"कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा। साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा।

अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू।।"³

सिद्ध-नाथपंथ के योगियों की उपासना और साधना परम्परा का मूल अत्यन्त प्राचीन है, जिसका संकेत वैदिक धर्मग्रंथों अथर्ववेद, यजुर्वेद, जैमनीय ब्राह्मण, महाभारत और भागवत पुराण से प्राप्त होता है। वैदिक काल में व्रात्य समुदाय द्वारा भगवान् रुद्र/शैव/शिव की उपासना के उल्लेख मिलते हैं। ये साधक ध्यान, प्राणायाम तथा आन्तरिक तप पर विशेष बल देते थे। उनकी ध्यान-केन्द्रित उपासना पद्धति सिद्ध-नाथपंथी योग साधना से पर्याप्त साम्य रखती है। ऋग्वेद में वर्णित केशी मुनि की वेश-भूषा, आचार-व्यवहार तथा साधना-पद्धति के आधार पर वे रुद्र/शिव उपासक तपस्वी थे। जिनका जीवन भगवान रुद्र के समान वैराग्य और आध्यात्मिक एकाग्रता से प्रेरित था। सिद्ध-नाथपंथी योगी आदिनाथ अर्थात् भगवान शिव को अपने सम्प्रदाय का आदि प्रवर्तक मानते हैं। परम्परा के अनुसार भगवान शिव से गुरु मछेन्द्रनाथ को योगविद्या की प्राप्ति हुई और उन्होंने यह ज्ञान गुरु गोरखनाथ को प्रदान किया। गुरु गोरखनाथ ने इस साधना परम्परा को न केवल व्यवस्थित स्वरूप दिया, अपितु उसे व्यापक रूप से जनमानस के मध्य प्रतिष्ठित करने का कार्य भी किया। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप नाथपंथ भारतीय आध्यात्मिक चेतना में एक सशक्त योग आन्दोलन के रूप में विकसित हुआ।



श्रीनगर-गढ़वाल में नाथपंथ के प्रमुख केंद्र किलकिलेश्वर मंदिर में नाथपंथ से सम्बंधित मूर्तियाँ

भारतवर्ष का उत्तरी भाग गढ़वाल सिद्ध और नाथों का योग, ध्यान, तप और सिद्धि के लिए पवित्र स्थान रहा है। डॉ. पीताम्बरदत्त बडधवाल ने गोरखबानी में लिखा है-

"दक्षिणी जोगी रंगा चंगा, पूरबी जोगी बादी।

पछमी जोगो बाला भोला, सिध जोगी उतराधी।।

अवधू पूरब दिखि व्याधिका रोग, पछिम दिसि मितु का सोग।

दछिण दिस माया का भोग, उत्तर दिसि सिध का जोग।"⁴

अर्थात् भारतवर्ष की चारों दिशाओं के योगियों (जोगियों) के अलग-अलग गुण और विशेषताएं हैं। दक्षिण का जोगी प्रसन्न व आकर्षक, पूरब का जोगी तर्क-वितर्क की प्रवृत्ति का, पश्चिम का जोगी सरल व सहज स्वभाव का और उत्तर दिशा हिमालय का जोगी सिद्ध योगी है अर्थात् वह अपनी योग साधना, आत्मसंयम और आध्यात्मिक विकास की ओर उन्मुख है। "नाथ (जोगी) सम्प्रदाय के संस्थापक गोरखनाथ हैं। इनके बारह पंथ हैं। इनमें कुछ कानों की लौ पर लकड़ी के कुण्डल पहनते हैं। इनका धर्म योगिक क्रियाएँ हैं तो भी ये गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हैं तथा खेती-बाड़ी का कार्य करते हैं। ये शिवोपासक हैं।....केदारखण्ड में जोगियों की परम्परा में (1) ब्रह्मचारी (2) संन्यासी (3) जोगी (4) नाथ तथा (5) वैरागी अथवा वैष्णव नाम एवं वेषधारी जोगी मिलते हैं।"⁵ गढ़वाल में गुरु गोरखनाथ से सम्बद्ध यह परम्परा विभिन्न नामों और रूपों में प्रचलित रही है, जैसे- "1. नाथ सम्प्रदाय(प्रवर्तक आदिनाथ शिव) 2. सिद्धमत 3. सिद्धमार्ग 4. योगाचार्य परम्परा 5. योग सम्प्रदाय 6. अवधूत मत 7. अवधूत सम्प्रदाय।"⁶ योग का नित्य अभ्यास इस सम्प्रदाय का केन्द्रीय तत्व है। जिनके अनुसार नाथ वह है, जिसने योग साधना के माध्यम से अपनी ज्ञानेंद्रियों और कर्मेन्द्रियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया हो। गढ़वाल में सिद्ध-नाथ परम्परा का काल सामान्यतः 10वीं-12वीं शताब्दी का प्रारम्भिक समय स्वीकार किया जाता है। जब यह परम्परा भारतीय आध्यात्मिक चेतना में एक प्रभावशाली एवं संगठित साधना के रूप में प्रतिष्ठित हुई। गुरु मछेन्द्रनाथ ने 8वीं-9वीं शताब्दी में नेपाल से इसका प्रचार-प्रसार आरम्भ किया और गुरु गोरखनाथ ने इसे सामान्य जनमानस के मध्य और अधिक लोकप्रिय करने का कार्य किया।

गढ़वाल में 14वीं-15वीं शताब्दी में इस परम्परा का विस्तार तब और अधिक हुआ, जब नाथपंथी गुरु सत्यनाथ की शिक्षा से प्रभावित होकर गढ़नरेश अजयपाल ने नाथपंथ को स्वीकार कर यहाँ के बावन गढ़ों को युद्ध में विजित किया। जिस कारण 15वीं शताब्दी से बावन गढ़ों के संगठित भू-भाग को गढ़वाल नाम से संबोधित किया जाने लगा। गढ़नरेश अजयपाल द्वारा नाथपंथ को स्वीकार कर विजयी होने पर गढ़वाल में सामान्य जनमानस द्वारा इनकी शिक्षा और साधना पद्धति को लोकजीवन में अपनाया जाने लगा। गुरु गोरखनाथ की उत्पत्ति के विषय में गढ़वाली लोकमान्यता के अनुसार सृष्टि में सर्वप्रथम ओंकार की उत्पत्ति हुई। जिनसे निरंकार भगवान शिव का उद्भव हुआ और भगवान शिव की जटाओं से गुरु गोरखनाथ की उत्पत्ति हुई। इस सन्दर्भ में गढ़वाली जागर गाथाओं और डॉ. पीतांबरदत्त बडधवाल ने अपने ग्रन्थ मकरंद में गुरु गोरखनाथ की उत्पत्ति भगवान शिव की जटाओं से मानी है।

“पैले ऊँकार तब भयो निरंकार

शिव जी की जटा से उपजे गुरु गोरखनाथ।।”⁷

गढ़वाल में निरंकार, गरुड़ासन, सूरजू कौल (सुरजू कुँवर), ब्रह्मकौल (ब्रह्म कुँवर), सिदवा-विदवा रमोला, राजुला-मालूशाही लोकगाथाओं में गुरु गोरखनाथ की तांत्रिक सिद्ध शक्तियों का उल्लेख मिलता है। गढ़वाल की जागर परम्परा में इन्हें डौर (डमरू) और काँसे की थाली पर नचाने की परम्परा रही है। गढ़वाली जागर गीतों में गोरखनाथ के प्रति अत्यधिक श्रद्धा और भक्ति भावना के कारण इन्हें लोकदेवता निरंकार, नरसिंह और भैरव का स्वरूप माना जाता है।

लोकगीतों में नाथपंथ से सम्बन्धित वस्त्र, झोली, शंख, चिमटा, टिमरू का डंडा, नौ-लड़ियाँ चाबुक आदि शस्त्रों का वर्णन मिलता है। जागर के समय इन शस्त्रों का पूजन किया जाता है और देवता के पशवा इन शस्त्रों को हाथों में धारण कर अग्नि के चारों ओर नृत्य करते हैं। देवता के उग्र होने पर नौ लड़ियाँ चाबुक से वह अपने शरीर पर प्रहार करता है और साथ ही अग्नि में गर्म किए चिमटे-चाबुक को जीभ से चाटकर व शरीर पर मारकर अपनी शक्ति का परिचय देता है। देवता को जाग्रत करने के लिए जागरी (देवता को अपने शाबर मन्त्रों से जाग्रत करने वाला व देव शक्ति को जाग्रत करने वाले को जागरी कहा जाता है।) कहता है-

“जाग-जाग नरसिंह वीर बाबा

रूपा को तेरो सोट्टा जाग, फंटिगू की तेरी मुद्रा जाग

डिमरी रसोया जाग, केदारी रौल जाग

नेपाली तेरो चिमटा जाग, खरुवा की तेरी झोली जाग

तामा को पत्री जाग, सतमुख तेरो शंख जाग

नौ लड्ड्या चाबुक जाग, ऊर्दमुखा तेरो नाद जाग

गुरु गोरखनाथ का चेला जाग।।”⁸



सिद्ध-नाथपंथ के आराध्य देव कमलेश्वर महादेव, भैरवनाथ देवता, गुरु गोरखनाथ

गुरु गोरखनाथ के शाबर मंत्रों से लोकजीवन को नकारात्मक बाह्य-शक्तियों और असाध्य रोगों से बचाने के कारण उन्हें भैरव के रूप में स्वीकार किया गया है।

“श्री गोरखनाथ वीर भैराऊ बाबा, जिनने गोरष पंजा गोरख ध्यान,

गोरख की पिंडी औतार लिया...।।”⁹

भैरवनाथ के जागर गीतों में सिद्ध-नाथपंथ के गुरुओं नादबुद्ध, ब्रह्मनाथ, मछेन्द्रनाथ, चौरंगीनाथ, गुरु गोरखनाथ को भैरव अवतारी माना जाता है। वर्ष में एक या दो बार दिन या रात्रि के समय जागर गीतों में सिद्ध-नाथपंथ के निरंकार,

भैरव, नरसिंह और नागर्जा देवता के पसवा (जिस पर देवता अवतरित होता है) को प्रसन्न करने के लिए पूजन कर नचाये जाने की प्राचीन परम्परा रही है-

“ॐ नमो आदेश, गुरु को आदेश।

प्रथम सुमिरौं नादबुद भैरों, द्वितीय सुमिरौं ब्रह्मा भैरों

तृतीय सुमिरौं मछेन्द्रनाथ भैरों, मच्छ रूप धरी ल्यालो

चतुर्थ सुमिरौं चौरंगी नाथ, पंचमें सुमिरौं पिंगला देवी।

षष्ठे सुमिरौं श्री गुरु गोरख साईं, सप्तमे सुमिरौं चंडिका देवी।।”¹⁰



कमलेश्वर मंदिर श्रीनगर-गढ़वाल में सिद्ध-नाथपंथी गुरुओं के समाधि चिह्न

गढ़वाल में "नाथ-सिद्ध योगियों के धार्मिक प्रभावों ने लोकधर्म को एक विचित्र रूप प्रदान किया है। आज ये प्रवृत्तियाँ अपने विशिष्ट रूप में लुप्त हो चुकी हैं, किंतु उनके अवशेष अभी तक विद्यमान हैं। माणिकनाथ का डांडा सिद्ध और नाथ योगियों के अधिवास के रूप में गढ़वाली जनश्रुति में चिरकाल से प्रसिद्ध रहा है। बूढ़ाकेदार में नाथों की समाधियाँ बनी हैं। गढ़वाल के कई गांवों में साईं और जोगी नाम से कनफटे जोगियों के वंशज मिलते हैं, जो कई पीढ़ियों से गृहस्थों का जीवन-यापन करते आ रहे हैं। तंत्र-मंत्र, जादू-टोनों तथा आचार-अभिचारों में इन योगियों का महत्वपूर्ण योग रहा है। गढ़वाल के तंत्र-मंत्रों, झाड़ा-ताड़ा (झाड़-फूंक और ताड़न), रखवाली (राखावली क्षारावती), टंट-घंट, उखोल-भेद (उखाड़ फेंकना प्रभाव मोचन), वशीकरण, उच्चाटन आदि गीतों में नाथ-प्रभाव ही दृष्टिगत नहीं होता, वरन् उनमें सत्यनाथ, गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, चैरंगीनाथ, बटुकनाथ, पिंगला देवी आदि के नाम भी आए हैं। इन मंत्र-गीतों में गुरु और राख की विशेष महत्ता गायी है। गुरु की महत्ता की स्वीकृति योगियों की साधना-पद्धति का मुख्य अंग रहा है।”¹¹ गढ़वाल में नाथपंथ के लोक गीतों में भगवान विष्णु, शिव-पार्वती, सूर्य-चन्द्र से ज्ञान, बल, बुद्धि, विवेक, अन्न-धन्न और प्रकृति का सहयोग प्रदान करने का आग्रह किया गया है। गढ़वाल हिमालय के लोक-जीवन ने नाथ संप्रदाय की शिक्षा और आध्यात्मिक सिद्धान्तों को इस प्रकार से आत्मसात किया है कि उन्हें गुरु गोरखनाथ को अपने आराध्य देवता और धार्मिक गुरु के रूप में स्वीकार करने पर गर्व और अपनत्व का भाव देखने को मिलता है।

"हाथ जोड़ी गुरु जी परणाम, पैले मामा हरि को परणाम,

जौन उपजाई सकल संगसार, जुवार लगौंदू देवी जी पार्वती,

जीका सत्त से होये अनिधिपुराण, जुवार लगौदू गुरु जी गोरख,

मैकू देण गुरु जी सकल संगसार, चंद सुरज देण पौन पाणी,

मैकू देण गुरु जी विधना को भार।।¹²

सिद्ध-नाथपंथ की साधना में राख का विशेष महत्व है। सिद्ध योगी अपने सम्पूर्ण शरीर पर इसे धारण करते हैं। यह शरीर की अनिष्टकारी शक्तियों से रक्षा करती है। राख को पवित्र और तीनों लोकों में तारने वाली माना जाता है। "गढ़वाल के कई गांवों में नाथ और सिद्ध संप्रदाय के योगी मिलते हैं, जो अब गृहस्थ हो चुके हैं। तंत्र-मंत्रों, जादू-टोनों में इस संप्रदाय के योगियों का प्रमुख स्थान रहा है। ओझा के मंत्रों, झाड़ा-ताड़ा (झाड़-फूंक और ताड़न), रखवाली, टंट-घंट, वशीकरण, उखेल भेद (प्रभाव मोचन) आदि गीतों में वज्रयानी नाथ सिद्ध प्रभाव ही नहीं वरन् उनके नाम भी स्पष्ट हैं। गोरखनाथ, सतनाथ, मछिन्दर नाथ, चौरंगीनाथ, बटुकनाथ, पिंगला देवी आदि के नाम उनमें अनेक बार आये हैं। इन गीतों में ताड़न, मारण और प्रभाव-मोचन का भाव मिलता है और राख का महत्व बताया गया है। प्रायः भूत, भैरव, जग्स (यक्ष) आदि अनिष्ट शक्तियों से मुक्त करने के लिये राख की चुटकी का उपयोग किया जाता है।"¹³ इसको धारण करने से सभी दोषों का निवारण होता है। अनेक सिद्धजन इसे अपने मस्तक पर धारण करते हैं।

"ओं नमो बभूत, माता बभूत, पिता बभूत, बभूत तीन लोक तारिणी। ओं नमो बभूत,

माता बभूत, पिता बभूत, सर्व दोष निवारिणी। ईश्वरल औणी गौरजाल छाणी

अनंत सिद्धों ने मस्तक चढ़ावनी, चढ़े बभूत नि पड़े हाऊ,

रच्छा करे आत्म विश्वासी गुरु गोरख राऊ।।¹⁴

इसी प्रकार गढ़वाल हिमालयी लोकजीवन में भैरव स्वरूपी गुरु गोरखनाथ से रक्षा करने के लिए आह्वान करते हुए कहते हैं कि दैत्य, दानव, भूत, प्रेत, छल-बल से मेरे इस पिण्ड स्वरूपी शरीर की रक्षा करना। मैं आठों प्रहर आपका ही सुमिरन करूंगा।

"तू जागिजा रा बीर भैराऊँ तू जागिजा।

झै झै गोरषनाथ जी तेरे आगे छल देव बल होइगो

तुम हकारी बोलादो बाण सघारी लीया। मृत्युमडल की थोड़ी निनाई

दैत्र दानव भूत प्रेत का बाण सघारी लीया।

चिया को छार मडा को हाड मूल्याव को हाड

मडघट की माटी मूल्याव की षोपडी के बाण सघारी लीया।

सिधा गुरु गोरषनाथ वीर भैराऊँ

येइ घट पिडा तू रष ले बाबा तेरी चैकी।

तेरो पहर तेरो सुमिरन श्री गुरु पादुकाय।"¹⁵

भारतीय संतों की परम्परा में चौरासी सिद्ध और नौ-नाथों का विशेष महत्त्व है, जिन्होंने लोक कल्याण निहितार्थ शाबर मन्त्रों को लयबद्ध कर जागर गीतों के माध्यम से प्रसारित करने का कार्य किया। गढ़वाल में सिद्ध और नाथपंथ के प्रभाव से सम्बन्धित शाबर मन्त्र हैं-

आत्म-रक्षा के लिए शाबर मन्त्र -

“ॐ नमो आदेशं, माता पिता गुरु देवता कू आदेश,
धनेत्री वैद कू आदेशं, गोदड़या सिद्ध कू आदेश,
तीन खंड धर्ती कू आदेशं, नौ खण्ड आकाश कू आदेश।
केशरी का पुत्र नरसिंघ वीर कू आदेशं,
तुरंकणी का पुत्र मैमन्दावीर कू आदेश...।”¹⁶

शत्रु से रक्षा और उसमें भय के लिए शाबर मन्त्र-

“गुरु गोरख नाथ कू आदेश, गुरु शम्भूनाथ कू आदेश,
ज्ञानपा भैरोनाथ कू आदेश, गुरु अतंपाल कू आदेश,
चैरासी सिद्धों कू आदेश....।
नौ नाथ-चैरासी सिद्धों का ध्यान जाग,
चैसठ जोगणियों का ध्यान जाग,...तुंगनाथ का मन्दिर जाग,
मदमहेश्वर का मन्दिर जाग, महारूद्र का रुद्री हिंवाल जाग....
तप्तकुण्ड सप्तकुण्ड का स्नान जाग,
सात द्वीप सप्त समोद्र जाग, नवखंड पृथ्वी जाग...।”¹⁷

दिशा बंधन, महामारी, रोग ग्रसित व्यक्ति की रक्षा का मन्त्र-

“ॐ नमो, गुरु को आदेश, माता-पिता गुरु को आदेश
बन्धों बन्धों दिशा बन्धों, उत्तर बन्धों दक्षिण बन्धों,
पूरब बन्धों, पश्चिम बन्धों नैरत, निशाण बन्धों
डैडणी, डैणियों को बन्धौ
उखेलो बड़ा मशाल, उखेलों, भूत प्रेत उखेलों
भड़पाट का कोयला से उखेलों

भौकदा कुत्ता को बाण उखेलों, मुर्गा को बाण को उखेलों
हनुमत्ता माता अंजनी दुहाई इस पिंडा परमात करें
दोफरिया तोर्ण को बन्धौ, शेर को मोच को बन्धौ।
चौबाटा की धूल उखेलों..... फुर मंतरो, ईश्वरो वाच.....
या पिंडा को छल छिद्रकरी, भूत प्रेत हर ले सुवामी,
परचण्ड बाण मारि ले स्वामी
मुण्ड को मुंडारो उखेल, गात को जर उखेल,
पीठ को सड़कों उखेल।।^{"18}

विष के प्रभाव को उतारने का मन्त्र -

“ॐ नमो आदेस माता पिता गुरु देवता कौ आदेस
राजा रामचंद्र की आण, गुरु गोरखनाथ तेरी आण,
हनुमंत वीर तेरी आण पडैं, लक्ष्मण जत्ती तेरी आण पडैं
लोणा चमारी की आण पडै... सरदो विष बंधौ, पसरदो विष बंधौ,
खांदो विस बंधौ, खज्यान्दो विष बंधौ, लौल्यांदो विष बंधौ,
छौल्यांदो विष बंधौ, चड़कदो विष बंधौ,
चचड़ांदो विष बंधौ, उबो सरदो विष बंधो...।^{"19}

गढ़वाली समाज में अनिष्टकारी नकारात्मक शक्तियों विष, ज्वर, आँख, कान, पेट, सिरदर्द जैसे रोगों के निवारण, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि से मुक्ति के लिए गारुडी मंत्र का प्रयोग किया जाता है। जिसमें महादेव, माता पार्वती, गुरु गोरखनाथ, भगवान धन्वंतरी का आह्वान विष के प्रभाव को कम करने व भगवान श्रीराम, अर्जुन के बाणों, भीम की गदा, नकुल की छड़ी, भगवान शिव के त्रिशूल और माँ काली के खड्ग से इन अनिष्टकारी शक्तियों के प्रभाव को खत्म कर लोकजीवन से दूर भगाने का आह्वान किया जाता है।

"गुरु जी कौँ आदेस, तेतीस करोड़ देवतौँ कू आदेस
महादेव पार्वती कौँ आदेस, गुरु गोरख कू आदेस
धन्वंतरी वैद आज विष झाड़ंतो आयो
बणों मेरा लुवार, विष काटण्या छुरी
त्वैन अर्जुन को बाण गढ़ी, त्वैन रामचंद्र जी को धनुष गढ़ी

तौ बाणून मैं विष मारूँ, तैं छुरीन विष काटूँ
सिर बैठूँ, सिरना का को विष काटूँ, आँख बैठ्याँ आँख को विष काटूँ
पेट को, कोख को विष काटूँ, कान को विष काटूँ, दाँत को विष काटूँ
हे रे विष, येई पिंडा तैं छोड, हे रे विष, तू माटी मा समै जा
हूँ जसी गँली जा चली जा, अपनी जात अपनी थात मा चलि जा
देख रे दिशा-दिशा से गरुड़ आया, वायु वेग से गरुड़ आया
मोर पंख लीकि विष झाड़णूक आया, बायाँ पाँखन गरुड़ विष झाड़ला
दायाँ पाँखन अमृत सिंचला, विष को निरविष करला
धन्वंतरी वैद तेरा विष दबै से काटलो, तेरो विष गरुड़ की पाँख से काटलो
महादेव का त्रिशूल से काटलो, महाकाली का खांडा से काटलो
नकुल की छड़ी से, भीमसेन की गदा से, कालिया लुवार की छुरी से काटलो
जा रे विष भोल भाटी है जा, हूँ पाणी मा जा, लूण पाणी सी बिलै जा
पताल जा, खाड जा, खमखोर जा, हे मेरा विष, तू अपना बाटा लग,
तवै गुरु की दुहाई रे विष, मेरि भक्ति गुरु की शक्ति
फुर मंत्र ईश्वरोवाच।^{"20}

इसी प्रकार ज्वर, सिरदर्द, हंकार और नजरदोष के निवारण के लिए हनुमान जी का आह्वान किया जाता है और उनसे शरीर में होने वाले प्रत्येक दर्द तथा ज्वर का नाश करने की प्रार्थना की जाती है। गढ़वाल में गोरखनाथ से सम्बंधित शाबर मंत्रों में देवताओं को इन रोग, शोक और दुःख-दर्द निवारण के लिए सौगंध देकर कार्य करवाया जाता है। जैसे- हनुमान जी को श्रीराम, गुरु गोरखनाथ और चौसठ-योगनियों की सौगंध देकर अनिष्टकारी शक्तियों के प्रभाव को कम करने के लिए कहा जाता है।

"ओम नमो आदेश गुरु कौं आदेश
अंजनी पुत्र हणमंत त्वैइ कू आदेश
वीर बजरंगी हणमंत आयो पर्वत से बूटी ल्यायो
गति को जर, मुंड को मुंडारो उषेल दे स्वामी
ये पिंडा को छल छिद्र हाक, जाप, हंकार जंकार तरास हरे हणमन्त वीर
इस पिंडा की बिथा का सोत्र मार, देखदी बिथा की आँखी मार

बोलदी बिथा की जिभ्या मार, जैसा बोलूँ वैसा करे
गति को जर मुंड को मुंडारो मार, मुंड को मुंडारो उषेल
त्वै आण से गुरु गोरख की, त्वै चौसठ जोगण्यों की दुहाई
ईश्वरोवाच फट स्वाहा।²¹

सभी प्रकार के भय से मुक्ति के लिए -

गढ़वाल के लोकजीवन में मानव की रक्षा के लिए आठों प्रहर अष्टभैरव स्वरूपी - नाथबुद्ध भैरों, महारुद्र भैरों, त्रिलोकीनाथ भैरों, चौरंगीनाथ भैरों, ब्रह्मनाथ भैरों, मच्छेन्द्रनाथ भैरों, विष्णुनाथ भैरों, गुरु गोरखनाथ भैरों आदि गुरुओं का स्मरण किया जाता है और वीर बजरंगबली से आग्रह किया जाता है कि मानव शरीर की सभी प्रकार के रोग, शोक, भय और व्याधियों से रक्षा करें।

“ॐ नमो आदेश। माता पिता गुरु देवता को आदेश।

प्रथम में नाथ बुद्ध भैरों को आदेश, द्वितीय प्रहर महारुद्र भैरों को आदेश,
तृतीय प्रहर त्रिलोकी नाथ भैरों को आदेश, चतुर्थ प्रहर चौरंगीनाथ भैरों को आदेश,
पंचम प्रहर ब्रह्मनाथ भैरों को आदेश, षष्ठे प्रहर मच्छेन्द्रनाथ भैरों को आदेश,
सप्तम प्रहर विष्णुनाथ भैरों को आदेश, अष्टम प्रहर गुरु गोरखनाथ भैरों को आदेश,
अंजनी का जाया पवन पूत हनुमान गुसांई तुमको आदेश
इस पिण्ड की प्राण की रक्षा करे।”²²

गलत उद्देश्य से किए गए प्रयोग को निष्फल करना -

गढ़वाल हिमालय के लोकजीवन में मन्त्र शक्ति को किसी व्यक्ति द्वारा गलत उद्देश्य से किए गए प्रयोग को निष्फल करने का भी नियम है, जिसमें साधक अपने तपोबल और शाबर मन्त्र शक्ति का प्रयोग कर नकारात्मक शक्ति को वापस उसी व्यक्ति के पास भेजता है। जो उसका दुरुप्रयोग कर रहा हो-

“शरणागतो नमो: नमः

पांच पंडी छठा नारैण पूजी लेण

कौरों की कौरुला, पर्वतू की हूगला,

बासुकि नागलोक की माता, शरणागतो नमो नमः

सात धारों की सांक्री करे, झरझरांदा बूटे की छैल करे

फिरदा घट की कांकरी करे उल्लू की आंख करे

सेंदुला की पांख करे, काणा बल्द को गोबर करे

जावा गणो बैरी का घर जो बैरी करे सो बैरी मरे

जौ जसा जले, तिल जसा गले, जैका बाण होला, तै सणी खाण।।²³

गढ़वाल के लोक जीवन में तंत्र-मन्त्र (रखवाली, झाड़ा-ताड़ा, उषेल-भेद) करने वाले को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता है, साथ ही लोक में यह विश्वास है कि उन तांत्रिकों के वंश की वृद्धि नहीं होती है जो मंत्र शक्ति का ग़लत प्रयोग कर किसी का अहित करते हैं। जिस कारण सिद्ध-नाथ परम्परा के तन्त्र-मन्त्र से संबंधित शाबर मन्त्रों का विस्तार धीरे-धीरे कम होता गया। गढ़वाल “हिमालय में प्राचीन काल में जादू-टोने को बहुत महत्व दिया जाता था। जनश्रुति के अनुसार प्रसिद्ध है कि गढ़वाल-कुमाऊं में तंत्र-मंत्र संबंधी बहुत-सा साहित्य विद्यमान था, जो बाद में जान-बूझ कर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। कहा जाता है कि भूत-प्रेतों आदि को वशीभूत करने के लिए पर्वतीय पंडितों को अनेक सिद्धियां प्राप्त थी और वे उनसे मुक्ति दिलाने के लिए ही प्रसिद्ध न थे वरन् वे अंगार के पत्ते में मेढ़े बनाकर उन्हें विनोद के लिए परस्पर लड़ाया करते थे। यह माना जाता है कि हिमालय में जादू-टोने तथा तंत्र-मंत्र की यह परंपरा इतनी फैली कि तत्कालीन शासक इससे बहुत क्षुब्ध रहते थे। इस विद्या में बोक्सा जाति के लोग बड़े पारंगत माने जाते थे। उन्हीं के नाम पर इसे कभी बोक्स्याड़ी विद्या भी कहा जाता है। टिहरी गढ़वाल-नरेश सुदर्शनशाह (1790-1859) तंत्रशास्त्र के अच्छे ज्ञाताओं में माने जाते थे।... कहा जाता है कि उन्होंने तंत्र-मंत्र की साधक बोक्सा जाति को किसी उत्सव का बहाना बनाकर बुलाया और फिर तंत्र बल से उनके हाथ-पैर बंधवाकर उन्हें तथा उनके तंत्र-ग्रंथों को भागीरथी में डुबवा दिया। इस प्रकार गढ़वाल को तंत्र और तंत्र-ग्रंथों से मुक्ति मिली। फिर भी कई राजा तंत्र-मंत्र का प्रयोग करते रहे और अजयपाल, श्यामशाह, रानी कर्णवती का नाम मंत्रों में आता रहा।”²⁴ गढ़वाल में सिद्ध-नाथ परम्परा से संबंधित तंत्र-मंत्रों को रूढ़िवादी, अंधविश्वास या उपचार की पारम्परिक पद्धति के रूप में न देखकर, जनमानस की प्राकृतिक शक्तियों के प्रति आस्था, तन्त्र-मंत्र के सिद्धांतों में विश्वास, जीवन के अनुभव, संकट की स्थिति में सिद्ध गुरुओं के प्रति श्रद्धा व भक्ति के कल्याणकारी भाव को लोक संस्कृति से जोड़ने वाली महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्परा के रूप में देखा जाना चाहिए।

निष्कर्ष -

प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थ अथर्ववेद में जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, सांसारिक बाधाओं से मुक्ति और सुख-शांति-समृद्धि की कामना के लिए अनेक मंत्रों एवं धार्मिक अनुष्ठानों का वर्णन मिलता है। अथर्ववेद में अदृश्य प्राकृतिक शक्तियों के प्रति श्रद्धा, विश्वास और धार्मिक मान्यताओं से जीवन की समस्याओं का समाधान मिलता है। भारतीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्परा के विकास में अनेक जातियों, जनजातियों एवं समुदायों की महत्वपूर्ण भागीदारी रही है। प्रकृति के प्रति आस्था, उपचार की पद्धति व तन्त्र-मंत्र में विश्वास ने वैदिक और लौकिक दोनों परम्पराओं को प्रभावित किया। जिस कारण तंत्र-मंत्र-यंत्र की यह परम्परा अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक धाराओं के पारस्परिक सामंजस्य से होकर गढ़वाल में विकसित हुई। गढ़वाल हिमालय में तंत्र-मंत्र की लोकपरम्परा सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास का परिणाम है, जिसमें आत्मरक्षा, रोगों का निवारण, अनिष्टकारी शक्तियों से रक्षा, वशीकरण, मारण, मोहन तथा उच्चाटन से सम्बंधित अनेक मन्त्र लोकजीवन में व्यावहारिक रूप से प्रचलित रहे हैं। इन मंत्रों में लोकाचार व लोकविश्वास के साथ वैदिक परंपरा का भी समन्वय देखने को मिलता है। समय के साथ विभिन्न धार्मिक मान्यताओं एवं साधना पद्धतियों के प्रभाव से इन परम्पराओं के स्वरूप में निरंतर परिवर्तन होता रहा। सिद्ध और नाथ परम्पराओं ने तंत्र-मंत्र की लोकपरंपरा को नया स्वरूप प्रदान किया। जिस कारण अनेक मंत्रों में सिद्ध-नाथपंथ के साधक गुरुओं की आध्यात्मिक तन्त्र-मंत्र

शक्तियों का वर्णन यहाँ के लौकिक साहित्य (जागर गीतों, शाबर मंत्रों, लोकगीतों, लोकगाथाओं एवं लोककथाओं) में मिलता है।

आभार: लेखक, शोधकार्य में आर्थिक सहायता और सहयोग प्रदान करने के लिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (ICSSR), भारत सरकार, नई दिल्ली का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

संदर्भ सूची

1. बाबुलकर, मोहनलाल, हिमालय में मत-मतान्तर, देवप्रयागी अकादमी देवप्रयाग, प्रकाशन वर्ष 1982, पृष्ठ 104।
2. चातक, गोविन्द, गढ़वाली लोकगीत विविधा, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2001, पृष्ठ 26।
3. गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर, प्रथम सोपान, बालकाण्ड चौपाई 14, छंद 3।
4. बड्धवाल, पीतांबरदत्त, गोरखबानी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रकाशन वर्ष 1942, पृष्ठ 16।
5. बाबुलकर, मोहनलाल, हिमालय में मत-मतान्तर, देवप्रयागी अकादमी देवप्रयाग, प्रकाशन वर्ष 1982, पृष्ठ 104।
6. बाबुलकर, मोहनलाल, हिमालय में मत-मतान्तर, देवप्रयागी अकादमी देवप्रयाग, प्रकाशन वर्ष 1982, पृष्ठ 103।
7. बड्धवाल, पीतांबरदत्त, मकरंद, अवध पब्लिसिंग हॉउस, लखनऊ, प्रकाशन वर्ष 1938, पृष्ठ 29।
8. नौटियाल, शिवानंद, गढ़वाल के लोकनृत्य गीत, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रकाशन वर्ष 1981, पृष्ठ 98-99।
9. बड्धवाल, पीतांबरदत्त, मकरंद, अवध पब्लिसिंग हॉउस लखनऊ, प्रकाशन वर्ष 1938, पृष्ठ 29-30।
10. नौटियाल, शिवानंद, गढ़वाल के लोकनृत्य गीत, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रकाशन वर्ष 1981, पृष्ठ 105।
11. चातक, गोविन्द, गढ़वाली लोकगीत एक सांस्कृतिक अध्ययन, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2003, पृष्ठ 75।
12. चातक, गोविन्द, गढ़वाली लोकगीत- एक सांस्कृतिक अध्ययन, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2003, पृष्ठ 75।
13. चातक, गोविन्द, गढ़वाली लोकगीत विविधा, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2001, पृष्ठ 26।
14. चातक, गोविन्द, गढ़वाली लोकगीत-एक सांस्कृतिक अध्ययन, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2003, पृष्ठ 76।
15. बड्धवाल, पीतांबरदत्त, मकरंद, अवध पब्लिसिंग हॉउस लखनऊ, प्रकाशन वर्ष 1938, पृष्ठ 30।
16. नौटियाल, शिवानंद, गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव, सुलभ प्रकाशन लखनऊ, प्रकाशन वर्ष 1994, पृष्ठ 110।
17. नौटियाल, शिवानंद, गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव, सुलभ प्रकाशन लखनऊ, प्रकाशन वर्ष 1994, पृष्ठ 113-14।
18. नैथानी, शिवप्रसाद, उत्तराखण्ड गढ़वाल का जनजीवन, पवेत्री प्रकाशन श्रीनगर-गढ़वाल, प्रकाशन वर्ष 2012, पृष्ठ 304।
19. नौटियाल, शिवानंद, गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव, सुलभ प्रकाशन लखनऊ, प्रकाशन वर्ष 1994, पृष्ठ 116।



20. चातक, गोविन्द, गढ़वाली लोकगीत विविधा, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2001, पृष्ठ 61।
21. चातक, गोविन्द, गढ़वाली लोकगीत विविधा, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2001, पृष्ठ 61-62।
22. नौटियाल, शिवानंद, गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव, सुलभ प्रकाशन लखनऊ, प्रकाशन वर्ष 1994, पृष्ठ 128।
23. चातक, गोविन्द, गढ़वाली लोकगीत-एक सांस्कृतिक अध्ययन, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2003, पृष्ठ 72-73।
24. चातक, गोविन्द, गढ़वाली लोक गीत- एक सांस्कृतिक अध्ययन, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2003, पृष्ठ 70-71।